Universe Journal of Education & Humanities ISSN 2348-3067

Volume-5, No. II, Aug.-2018, pp.Hin.13-17

महात्मा गाँधी जी का दार्शनिक दृष्टिकोण

डा. वीरेन्द्र कुमार,
अस्सिटेन्ट प्रोफसर शिक्षा विभाग,
डी.पी.बी.एस. (पी.जी.) कालिज अनूपशहर बुलन्दशहर उ.प्र. भारत।

राष्ट्रपिता गाँधीजी के समस्त कार्य विशुद्व धार्मिक भावना एवं राष्ट्रीयता पर आधारित है। अहिंसा, सत्य एवं ब्रह्मचर्य के आदर्शों की स्थापना एवं कर्त्तव्य पालन को वे सर्वोच्च स्थान देते थे। उन्होंने शिक्षा में भी इन्हीं आदर्शो के पालन को प्रमुखता दी है। उनके विचारों में हम भारतीय आदर्शों के मध्य पाश्चात्य देश के नवीन मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का पूर्ण समावेश पाते हैं। उनकी वर्धा शिक्षा–योजना क्रियाशीलता के सिद्धान्तों पर आधारित है। देश की आर्थिक समस्या को हल करने तथा बालकों को आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाने के लिए उन्होंने बालकों को प्रारम्भ से ही उत्पादक हस्तकार्य में संलग्न होने का आदेश दिया। इसी कारण उनकी शिक्षा उत्पादक क्रियाशीलता में केन्द्रीत मानी जाती है। वे मातृभाषा को ही शिक्षा का माध्यम बनाना चाहते थे। भारत में स्वीकृत बेसिक शिक्षा–प्रणाली इसी वर्धा शिक्षा–योजना से उद्भूत हुई है।

"राष्ट्र के लिए गाँधीजी की अनेक देशों में से नवीन शिक्षा के प्रयोग की देन सबसे महान है। यह तरुण व्यक्तियों को सहयोग, प्रेम और सत्य के आधार पर एक समुदाय के रूप में रहने की शिक्षा देकर नये समाज के लिए नागरिकों को तैयार करने का प्रयत्न करती है।" **'हुमायूँ कबीर'**

मुख्य शब्दः– जीवन परिचय, गांधीजी की रचनाएं, गाँधीजी का जीवन दर्शन, सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, प्रेम, शिक्षक, अनुशासन, शिक्षार्थी, विद्यालय।

जीवन परिचय–

महान व्यावहारिक, दार्शनिक राजनीतिज्ञ एवं शिक्षाशास्त्री मोहनदास करमचन्द गाँधी का जन्म काठियावाड़ के पोरबन्दर (सुदामापुरी) नामक स्थान पर 2 अक्टूबर 1869 को हुआ था। उनके पिता करमचन्द गाँधी पोरबन्दर राज्य के दीवान थे। उनकी माता का नाम पुतलीबाई था, जो एक साध्वी एवं निष्ठावान स्त्री थी। उनकी व्रत, उपासना आदि में दृढ़ आस्था थी।

गाँधी जी की बाल्यावस्था पोरबन्दर में व्यतीत हुई। उन्होंने वहीं प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक पाठशाला में दाखिला लिया। जब गाँधीजी सात वर्ष के थे तब उनके पिता दीवान होकर राजकोट गये। उनको वहाँ एक विद्यालय में दाखिला कराया गया। गाँधीजी स्वभाव से संकोची थे। अतः वे अपने सहपाठियों से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास नहीं करते थे।

पिताजी राजकोट में दीवान रहने के बाद बांकानेर के दीवान पद पर कार्यरत थे। वे कुटुम्ब प्रेमी, सत्यप्रिय, शूर, उदार, किन्तु क्रोधी थे। वे घूसखोरी से दूर भागते थे, इसलिए शुद्ध न्याय करते थे। उनकी शिक्षा मात्र अनुभव की थी जिसे आज हम गुजराती की पाँच किताब का ज्ञान कहते हैं।

माताजी साध्वी स्त्री थीं। वह बहुत श्रद्धालु थीं। पूजा पाठ किये बिना कभी भोजन न करती। मन्दिर में हमेशा जाती। वह कठिन से कठिन व्रत शुरू करतीं और उन्हें निर्विघ्न समाप्त करती। इकट्ठे दो–तीन उपवास उसके निकट मामली चीजे थी। एक चातुर्मास में उसने सूर्य–नारायन का दर्शन करने के बाद ही भोजन करने का व्रत लिया था।

रचनाएँ–

1. **हिन्द स्वराज्य–**
इसमें उनके भारतीय राष्ट्र के समस्त जीवन–पक्षों तथा क्रियाओं से सम्बन्धित आदर्शों की प्रथम एवं पूर्ण व्याख्या है।
2. **सत्य के साथ मेरे प्रयोग–**
यह उनकी आत्म–जीवनी है जिसमें उनके बचपन से लेकर भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेने तक का विवरण है। इसके अन्तर्गत दक्षिणी अफ्रीका में स्थित टालस्टाय फार्म में किए गये उनके प्रयोगों का उल्लेख भी है।

गाँधीजी का जीवन दर्शन

महात्मा गाँधीजी एक महान् दार्शनिक, शिक्षाशास्त्री तथा प्रयोगकर्त्ता थे। उन्होंने ईश्वर से लेकर 'परिवार नियोजन' तक हर बात पर अपने विचार प्रकट किये। वह भारत के प्राचीन मानवीय आदर्शवाद से बहुत प्रभावित थे। उनके कुछ दार्शनिक सिद्धान्तों का संक्षिप्त विवेचन यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है :–

1. ईश्वर में पूर्ण विश्वास – सभी आदर्शवादियों के अनुसार गाँधीजी भी ईश्वर में पूर्ण विश्वास रखते थे। वह ईश्वर को सर्वव्यापक जानते थे। इस सम्बन्ध में मेरे दृष्टिकोण से **"ईश्वर एक है, सर्वशक्तिमान है और सभी जगहों पर विराजमान है।"** ईश्वर अन्तिम सत्य है; और सर्वोच्च शासक है। वही सत्य है, प्रेम है, नैतिकता है तथा प्रकाश और जीवन का स्रोत है। वह निर्माण करता है, विनाश करता है, फिर निर्माण करता है। अतः वह चाहते थे कि लोगों को ईश्वर को सजीव एवं सर्वप्रभुत्व सम्पन्न सत्ता में सजीव रखना चाहिए। जीवन का अन्तिम उद्देश्य ईश्वर अनुभूति होना चाहिए।

2. सत्य– गाँधीजी के मतानुसार **ईश्वर सत्य है और सत्य ईश्वर है।** हृदय से निकली आवाज ही सत्य है। यह आत्मा की

Scanned by CamScanner

पुकार है। वह स्वयं सत्य का अनुभव करना चाहते थे। वह चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को सत्य की खोज करनी चाहिए। अन्तिम सत्य या ईश्वर ही गाँधी जी के दर्शन का साध्य है। सत्य इस अन्तिम सत्य या ईश्वर को प्राप्त करने का साधन है। गाँधीजी ने स्वयं कहा है– "सर्वव्यापक सत्य साध्य है और सच्चाई द्वारा अर्थात् कठोर अनुशासित जीवन, निर्धनता, असंचयता, अहिंसा, विनम्रता, अनुशासित मन, शरीर आत्मा द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।"[1]

3. अहिंसा– सत्य के लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन अहिंसा है। हिंसा से पूर्ण मुक्ति ही अहिंसा है अर्थात् घृणा, क्रोध, भय, अहंकार, कुभावना से मुक्ति। अहिंसा में विनम्रता, उदारता, प्यार, धैर्य, हृदय की शुद्धता तथा चिन्तन वाचन तथा कर्म मे भावुकता का अभाव सम्मलित है। यह हमें सभी जीवों को प्यार करने की प्रेरणा देती है। यह आत्मा को शुद्ध करती है।

4. सत्याग्रह– सत्याग्रह अहिंसा का व्यावहारिक प्रयोग है। यह दूसरों को दुःख देने के बजाय स्वयं दुःख झेलकर न्याय प्राप्त करने की विधि है। सत्याग्रह के द्वारा शान्ति की रक्षा की जा सकती है। सच्चा सत्याग्रही वह है जो सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अभय, अस्तेय (चोरी न करना) तथा असंचय में विश्वास रखता हो। अतः सत्याग्रही का जीवन कठोर अनुशासन पर आधारित होता है।

5. व्यक्ति की आध्यात्मिक प्रवृत्ति– गाँधीजी का विश्वास था कि व्यक्ति में आध्यात्मिक तत्व है। वह आध्यात्मिक जीव है। अतः व्यक्ति के जीवन का उद्देश्य आध्यात्मिक होना चाहिए, भौतिक नहीं। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मनुष्य को साध्य समझा जाना चाहिए, साधन नहीं।

6. प्रेम– गाँधीजी मानव प्रेम में दृढ़ विश्वास रखते थे। उनके लिए प्रेम ही नैतिकता का सार है। प्रेम के बिना किसी प्रकार की नैतिकता सम्भव नहीं। प्रेम से ही सत्य प्राप्त होता है। प्रेम मनुष्य को ईश्वर की ओर ले जाता है। प्रेम के कारण सभी कर्त्तव्य आनन्दमय हो जाते हैं। अतः समस्त जीवन का मार्ग–दर्शन प्रेम के द्वारा ही होना चाहिए। गाँधीजी द्वारा प्रतिपादित सामाजिक एवं राजनीतिक आन्दोलन उनके मानव प्रेम द्वारा ही प्रेरित थे।

7. आध्यात्मिक समाज की धारणा– महात्मा गाँधी जी प्रेम, अहिंसा, सत्य, न्याय तथा धन के सम–वितरण के सिद्धान्तों पर आधारित आध्यात्मिक समाज की स्थापना करना चाहे थे। यह समाज सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक हर प्रकार के शोषण से मुक्त होगा। इसमें किसी प्रकार के झगड़े नहीं होंगे। नैतिक शक्ति तथा नैतिक मान्यता ही समाज का मार्गदर्शन करेगी। सब की सेवा करना इस समाज के प्रत्येक व्यक्ति का बुनियादी कर्त्तव्य होगा। ईश्वर और मानवता की सेवा गाँधीजी का सर्वोच्च धर्म था और उनका विश्वास था कि हम ईश्वर की सेवा तभी कर सकते हैं जब हम ईश्वर के बनाये हुए जीवों की सेवा करें।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी अपने दार्शनिक विचारों को वास्तविक जीवन में कार्यान्वित करने का भरसक प्रयत्न करते रहे।

8. निर्भीकता– निर्भीकता उनके जीवन दर्शन का तीसरा सिद्धान्त है। गाँधीजी के कथनानुसार सत्य एवं अहिंसा के लिए निर्भीकता आवश्यक है जो व्यक्ति निडर या निर्भीक नहीं है अथवा जो कायर है और डरता है वह सत्य एवं अहिंसा के सिद्धान्तों का पालन नहीं कर सकता। व्यक्ति को सभी प्रकार से भयमुक्त होना चाहिए। ऐसा व्यक्ति सत्य की प्राप्ति के लिए अटल रह सकता है।

महात्मा गाँधी के शैक्षिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण

महात्मा गाँधी एक प्रमुख राजनीतिज्ञ, दार्शनिक एवं समाज सुधारक होने के साथ–साथ एक महान शिक्षा शास्त्री भी थे। गाँधीजी ने राजनीति, समाज सुधार, सत्य और अहिंसा के क्षेत्रों में अति महान सफलताएँ प्राप्त कीं। इनके कारण शिक्षा सिद्धान्त और व्यवहार को दी जाने वाली उनकी देन बहुत ही कम याद आती है। वास्तव में शैक्षिक विचारकों में उनका स्थान अति श्रेष्ठ है। उन्होंने अपने जीवन के प्रारम्भ में ही अनुभव कर लिया था कि सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक प्रगति का आधार– **'शिक्षा'** है।

इस सम्बन्ध में **डा0 एम0एस0 पटेल** का विचार दृष्टव्य है– "गाँधीजी ने उन महान शिक्षकों और उपदेशकों के गौरवपूर्ण मण्डलों में स्थान प्राप्त किया है, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र को नवज्योति दी है। ग्रीन का कथन था कि पेस्टालॉजी आधुनिक शिक्षा–सिद्धान्त और व्यवहार का प्रारम्भिक बिन्दु था। जहाँ तक पाश्चात्य शिक्षा का सम्बन्ध है, यह बात सत्य हो सकती है। गाँधीजी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का निष्पक्ष अध्ययन सिद्ध करता है कि वे पूर्व में शिक्षा–सिद्धान्त और व्यवहार के प्रारम्भिक बिन्दु है।"

महात्मा गाँधी के शैक्षिक एवं दार्शनिक आधारभूत सिद्धान्त

1. शिक्षा बालकों को बेरोजगारी से मुक्त कराये ऐसी होनी चाहिए।
2. शिक्षा बालक एवं बालिकाओं में निहित सभी मानवीय गुणों के विकासार्थ होनी चाहिए।
3. सम्पूर्ण राष्ट्र के सात वर्ष (7–14) से चौहद वर्ष तक निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा दी जानी चाहिए।
4. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए और सब भाषाओं में इसका प्रमुख स्थान प्रथम होना चाहिए।
5. शिक्षा को बालक की आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक शक्तियों प्रोत्साहित करना चाहिए।
6. शिक्षा को मानव व्यक्तित्व– शरीर, हृदय, मस्तिष्क और आत्मा का सामंजस्यूपर्ण विकास करना चाहिए।
7. शिक्षा के विद्यालय के प्रत्येक बालक की शक्तियों का उस समुदाय के सामान्य हित के अनुसार, जिसका कि वह सदस्य है, विकास करना चाहिए।

Scanned by CamScanner

8. समस्त शिक्षक, जीवन की वास्तविकता परिस्थितियों में किया जाना चाहिए और उसका सम्बन्ध किसी दस्तकारी या सामाजिक और भौतिक वातावरण से होना चाहिए।
9. बालकों को अपना ज्ञान सक्रिय रूप से प्राप्त करना चाहिए और उसे उसका प्रयोग सामाजिक वातावरण को समझने और उस पर अधिक उत्तम नियन्त्रण रखने के लिए करना चाहिए।
10. बालक की शिक्षा किसी लाभप्रद दस्तकारी के शिक्षण से प्रारम्भ होनी चाहिए और जिस समय से उसका प्रशिक्षण प्रारम्भ हो जाता हो, उसी समय से उसे उत्पादन करने के योग्य बनाना चाहिए।

शिक्षा का अर्थ– महात्मा गांधीजी के अनुसार शिक्षा का अर्थ साक्षरता नहीं है वे चाहते थे कि भारत का प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित हो परन्तु शिक्षित होने से उनका अभिप्राय यह नहीं है कि वह साक्षर हो। वे कहते थे साक्षरता न तो शिक्षा का आदि है और न अन्त, वह केवल एक साधन है जिसके द्वारा व्यक्तियों को शिक्षित किया जाता है। जिसके द्वारा पुरूष और स्त्री को शिक्षित किया जा सकता है।[1] **शिक्षा विकास है** बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुमुखी विकास।"[2]

शिक्षा के उद्देश्य– गाँधीजी के विचार से मनुष्य से जीवन का अन्तिम उद्देश्य मुक्ति है। मुक्ति शब्द को इन्होंने बड़े व्यापक अर्थ में लिया है। वे पहले शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और राजनीतिक मुक्ति की बात करते थे और फिर आत्मिक मुक्ति की। उनका तर्क था कि जब तक मनुष्य को शारीरिक दुर्बलता, मानसिक तनाव, आर्थिक अभाव और राजनीतिक दासता से मुक्ति नहीं मिलती तब तक वह आध्यात्मिक मुक्ति की प्राप्ति नहीं कर सकता। यही कारण है कि वे शिक्षा द्वारा मनुष्य के शरीर, मन, और आत्मा का उच्चतम विकास करना चाहते थे।

शिक्षा एवं इसके उद्देश्यों के सम्बन्ध में महात्मा गाँधी के विचार निम्नलिखित हैं–

1. शारीरिक विकास– मनुष्य जीवन का कोई भी उद्देश्य क्यों न हो उसकी प्राप्ति इस शरीर द्वारा ही होती है। अतः उसका विकास अवश्य होना चाहिए। अपने विद्यालयी जीवन में ही गाँधीजी ने शिक्षा के इस उद्देश्य की आवश्यकता अनुभव कर ली थी। आगे चलकर उन्होंने उसे आत्मिक विकास के लिए आवश्यक समझा।

2.मानसिक एवं बौद्धिक विकास– गाँधीजी के अनुसार शरीर के साथ मन और आत्मा का भी विकास होना चाहिए। उनका कहना था कि जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिए माँ के दूध की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मानसिक विकास के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है। शिक्षा को यह कार्य अवश्य करना चाहिए।

3. चारित्रिक एवं नैतिक विकास– गाँधीजी चरित्र–बल के महत्व को जानते थे, वे शिक्षा द्वारा इसके विकास पर बल देते थे। एक उत्तम चरित्र मे वे सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, स्वावलम्बन, आत्मविश्वास एवं निर्भयता इन गुणों को आवश्यक समझते थे। विद्यालयों को वे चरित्र निर्माण की उद्योगशाला समझते थे। चरित्र निर्माण में ब्रह्मचर्य का विशेष स्थान मानते थे। इस सम्बन्ध में संस्कृत में ठीक ही कहा गया है –

"प्रासादस्य विनिर्माणे मूलभित्तिरमपेक्ष्यते तथैव जीवनस्यादौ ब्रह्मचर्यमपेक्ष्यते"

और भी ब्रह्मचर्येण देवाः मृत्युमुपादनतः।

आत्म विश्वास पर भी गाँधीजी ने जोर दिया है, अन्त में गाँधीजी ने चरित्र निर्माण के सम्बन्ध में लिखा है कि सभी ज्ञान का मूल उद्देश्य उत्तम चरित्र का निर्माण होना चाहिए।[1]

4. वैयक्तिक, सामाजिक एवं साँस्कृतिक विकास– गाँधीजी व्यक्ति के वैयक्तिक और सामाजिक दोनों प्रकार के विकास पर बल देते थे। इसके अनुसार संस्कृति का सम्बन्ध आत्मा से होता है और वह मनुष्य के व्यवहार में प्रकट होती है। वे मनुष्य के व्यवहार को नियन्त्रित करने और उसकी आत्मा के विकास के लिए उसके सांस्कृतिक विकास की आवश्यकता समझते थे और इसे शिक्षा का एक उद्देश्य मानते थे।

5. जीविकोपार्जन का उद्देश्य– गाँधीजी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को जीविकोपार्जन के योग्य बनाना है जिससे कि वह आत्मनिर्भर हो सके और समाज पर भार न रहे। इस प्रकार की दक्षता से स्वयं उसका समाज तथा देश का कल्याण सम्भव है।

6. मुक्ति का उद्देश्य– 'सा विद्या या विमुक्तये' गाँधीजी का यही आदर्श था। इस आदर्श के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को सांसारिक बन्धनों से मुक्त करना है और उसको आत्मा को उत्तम जीवन की ओर उठाना है। वे शिक्षा द्वारा व्यक्ति को आध्यात्मिक स्वतन्त्रता देना चाहते थे जिससे कि उसकी आत्मा का विकास सम्भव हो सके।

7. आध्यात्मिक विकास– गाँधीजी के अनुसार मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य मुक्ति, आत्मानुभूति, आत्मज्ञान अथवा आत्मबोध है। जिन शारीरिक, मानसिक, वैयक्तिक, सामाजिक, सांस्कृतिक चारित्रिक और व्यावसायिक विकास के सम्बन्ध में चर्चा की गई, सबका मूल उद्देश्य भी मनुष्य को आत्मज्ञान करने में सहायता करना है। इसके लिए गाँधीजी धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की भी आवश्यकता समझते थे। इस सम्बन्ध में गाँधीजी गीता से भी प्रभावित हैं। वे ज्ञान, कर्म, भक्ति, योग इन सब पर समान बल देते थे। अहिंसा और सत्याग्रह को वे इनका मूर्त रूप मानते थे।

गाँधीजी के अनुसार पाठ्यक्रम– गाँधीजी आधारभूत आवश्यकताओं के प्रति सजग थे। उन्होंने इन आवश्यकताओं की पूर्ति और वर्गहीन समाज के निर्माण के लिए प्रधान पाठ्यक्रम का निर्माण किया था। अपने द्वारा निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उन्होंने निम्नलिखित पाठ्यक्रम के स्वरूप को प्रस्तुत किया –

Scanned by CamScanner

1- **हस्तकला कौशल एवं उद्योग** (कताई, बुनाई, बागवानी, कृषि, काष्ठकला, चर्मफार्म, पुस्तकालय, मिट्टी का काम, मछली पालन, गृह विज्ञान आदि)।
2- **मातृभाषा।**
3- **हिन्दुस्तानी** (आजकल राष्ट्रभाषा उनके लिए जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है)।
4- **व्यावहारिक गणित** (अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित, नापतोल आदि।
5- **सामाजिक विषय** (इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, समाज का अध्ययन)।
6- **सामान्य विज्ञान** (बागवानी, वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान और गृह विज्ञान)।
7- **संगीत**
8- **चित्रकला**
9- **स्वास्थ्य विज्ञान** (सफाई, व्यायाम एवं खेल–कूद आदि)।
10- **आचरण शिक्षा** (भौतिक शिक्षा, समाज सेवा एवं अन्य सामाजिक कार्य)।

शिक्षण विधि– गाँधीजी धार्मिक होने के साथ–साथ बड़े व्यावसायिक भी थे। उन्होंने मनोविज्ञान का अध्ययन तो नहीं किया था पर ऐसा लगता है कि वे व्यावहारिक मनोविज्ञान के पण्डित थे। शिक्षण के क्षेत्र में वे सबसे अधिक बल देते थे। उनके अनुसार करके सीखना एवं स्वयं के अनुभव से सीखना होता है। इस सम्बन्ध में डा0 जाकिर हुसैन समिति के विचार दृष्टव्य हैं– "गाँधीजी अपनी शिक्षण –विधि के सहयोगी क्रिया, नियोजन, यथार्थता, चहलकदमी और व्यक्तिगत उत्तरदायित्व पर बल दिया गया है।"[1]

इनके अतिरिक्त जिन अन्य सिद्धान्तों को गाँधीजी ने अपनी शिक्षण विधि में स्थान दिया है वे इस प्रकार हैं–

(क) लिखना सिखाने से पहले पढ़ना सीखाना और वर्णमाला सिखाने से पूर्व ड्राइंग सिखाना।
(ख) करके सीखना
(ग) अनुभव द्वारा सीखना
(घ) सीखने की क्रिया में समन्वय
(ड़) भाषण एवं प्रश्न विधि
(च) मातृभाषा शिक्षा का माध्यम

अनुशासन– गाँधीजी अनुशासन के महत्व को स्वीकार करते थे पर उनके अनुसार यह अनुशासन आत्म –प्रेरित होना चाहिए। इस अनुशासन की प्राप्ति के लिए वे दमनात्मक विधि का विरोध करते थे। वे तो बच्चों को शुद्ध प्राकृतिक वातावरण और उच्च सामाजिक पर्यावरण में रखने पर बल देते थे। उन्हें विश्वास था कि इस प्रकार के पर्यावरण में बच्चे अनुकरण द्वारा उच्च आदर्शों एवं उच्च आचरण को ग्रहण करेंगे, परन्तु फिर भी बच्चे गलत रास्ते पर चलते हैं तो उन्हें सही रास्ते पर लाने के लिए अध्यापकों को अपने आत्मबल का प्रयोग करना चाहिए। परन्तु यह आत्मबल यूं ही नहीं आ जाता। इसके लिए अध्यापकों को स्वयं बृह्मचर्य जीवन का पालन करना होता है।

शिक्षक–गाँधीजी की दृष्टि से शिक्षक को समाज का आदर्श होना चाहिए। उनकी दृष्टि से इस व्यवसाय को केवल व्यवसाय रूप में स्वीकार करने वाला व्यक्ति कभी आदर्श अध्यापक नहीं हो सकता। एक अध्यापक आदर्श अध्यापक तभी हो सकता है जब वह इस व्यवसाय को सेवाकार्य के रूप में स्वीकार करे। उसे बच्चे के पिता, मित्र, सहयोगी और पथ–प्रदर्शक, अनेक रूपों में कार्य करना होता है इसलिए उसे सहिष्णु, उदारचेता और धैर्यवान होना चाहिए। इस सम्बन्ध में एन0आर0 रंगा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि– "जो कार्य शिक्षक कर सकता है वह है– प्रकाश स्तम्भ, संकेतबोर्ड, सन्दर्भ–पुस्तक, शब्दकोश, द्रावक और शिक्षा की जटिल प्रक्रिया को गति देने का कार्य।"[1]

शिक्षार्थी– शिक्षार्थी शिक्षा की प्रक्रिया का केन्द्र होता है। गाँधीजी के विचार से शिक्षार्थी को अनुशासित रहते हुए ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला होना चाहिए। गाँधीजी बच्चे को उसके सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास को दृष्टिगत रखते हुए वैयक्तिक विकास की पूरी छूट देते थे। गाँधीजी प्रारम्भ से ही बच्चों में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक बल पर विकास करने पर तथा उन्हें आत्मनिर्भर बनाने पर बल देते थे। उनके विचार से ऐसा ही व्यक्ति अपना और संसार का भला कर सकता है। गाँधीजी के अनुसार विद्यार्थी को संयमी के साथ–साथ जिज्ञासु भी होना चाहिए।

विद्यालय– विद्यालय के सम्बन्ध में गाँधीजी अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि विद्यालय ऐसी कार्यशाला हो जहाँ अध्यापक सेवाभाव एवं पूर्ण निष्ठा के साथ शिक्षण–कार्य करे और उनके साथ छात्रों को संयुक्त प्रयास से उनमें इतना उत्पादन कार्य हो कि वे आर्थिक दृष्टि से आत्म निर्भर हों। वे विद्यालयों को सामुदायिक केन्द्र बनाने पर भी बल देते थे। उनका यह कहना था कि विद्यालय में सामुदायिक विभिन्न प्रकार की क्रियायें होनी चाहिए साथ ही साथ पढ़ने एवं कार्य करने की सुविधायें भी उपलब्ध करानी चाहिए।

महात्मा गाँधीजी की अन्य दार्शनिक धारायें–

महात्मा गाँधी प्रकृतिवाद, आदर्शवाद, यथार्थवाद एवं प्रयोजनवाद आदि से अत्यधिक प्रभावित थे इस कारण इनके शिक्षा–दर्शन में इनका अच्छा पुट परिलक्षित होता है।

गाँधीजी की प्रकृतिवादी विचारधारा– गाँधीजी के शिक्षा दर्शन में हमें प्रकृतिवाद की झलक स्पष्ट दिखलाई पड़ती है। वे रूसो की भाँति शिक्षा–संस्थाओं तथा बालक के वर्तमान सामाजिक पर्यावरण को दोषपूर्ण मानते हैं; प्रकृति एवं ग्रामीण वातावरण को उत्तम समझते हैं। रूसों की भाँति गाँधीजी भी पाठ्य–पुस्तकों का विरोध करते हैं। वे कहते थे कि पुस्तकें उन बातों की चर्चा नहीं करती जिनका छात्रों को काम पड़ता है, वरन् उन बातों की चर्चा करती है जो बालक के लिए अजनबी है। वे बालक के व्यक्तित्व का आदर करते हैं और शिक्षा में स्वतन्त्रता एवं आत्मानुशासन पर बल देते हैं। उनकी बेसिक शिक्षा पूर्ण रूप से क्रिया द्वारा शिक्षा के सिद्धान्त पर आधारित

Scanned by CamScanner

है। उक्त बातों पर बल देने के कारण उन्हें प्रकृतिवाद दार्शनिक समझा जाता है।

गाँधीजी की आदर्शवादी विचारधारा– गाँधीजी के शिक्षा दर्शन में आदर्शवाद के गुण दृष्टिगत होते हैं। वे पूर्ण रूप से आदर्शवादी थे। वे ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करते थे। उनका कहना है कि प्रत्येक जीव में ईश्वर का वास होता है और कुछ प्रयत्न करने पर ईश्वर को पहचाना जा सकता है। ईश्वर को पहचानने के लिए समस्त प्राणियों से प्रेम करना आवश्यक है, जिसे वे सत्य का व्यावहारिक रूप कहते हैं। अतएव सत्य की प्राप्ति के लिए अहिंसा, विश्व–प्रेम और मानव सेवा ही साधन है। सत्य की प्राप्ति ईश्वर की प्राप्ति है। इसके अतिरिक्त उन्होंने शिक्षा के आदर्शवादी उद्देश्यों का समर्थन किया। वे बालक के शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का अन्तिम, पूर्ण एवं सर्वतोमुखी विकास करना चाहते हैं, जिससे कि वह अपने जीवन सामंजस्य, लक्ष्य, आत्मानुभूति अथवा ईश्वर को प्राप्त कर लें। आदर्शवादी दार्शनिक प्लेटो की भाँति गाँधीजी ने भी शिक्षा द्वारा एक ऐसे समाज की स्थापना की कामना की जहाँ शान्ति, सुख एवं समृद्धि हो। आदर्शवादी होने के नाते उन्होंने मनुष्य को प्रकृति से अधिक महत्वपूर्ण माना और इस बात पर बल दिया कि नैतिक एवं आध्यात्मिक वातावरण तथा संस्कृति का विकास मनुष्य की रचनात्मक क्रियाओं के फलस्वरूप होता है। अपने आदर्शवादी विचारधारा के आधार पर ही वे शिक्षक एवं शिक्षार्थी से यह अपेक्षा करते हैं कि वे ब्रह्मचर्य का पालन करें तथा संयमी एवं सदाचारी जीवन व्यतीत करें। वे आत्मानुशासन एवं आत्म नियन्त्रण पर भी बल देते हैं। इस प्रकार उनके विचार से यह स्पष्ट हो जाता है कि वे हृदय से आदर्शवादी थे, परन्तु उनके आदर्शवाद में भौतिकवाद की पूर्णतः उपेक्षा नहीं की गई है। वे भौतिक सम्पन्नता तथा आवश्यकताओं से मुक्ति का भी संदेश देते हैं।

गाँधीजी की यथार्थवादी विचारधारा– भौतिक सम्पन्नता की प्राप्ति के लिए प्रयास करना महात्मा गाँधी के दर्शन का एक हिस्सा है। इस दृष्टि से उनके दर्शन में यथार्थवाद की झलक मिलती है। उनका पाश्चात्य शिक्षा का विरोध करना, शिक्षा को भारतीय जीवन दर्शन पर आधारित करना, शिक्षा को जीवन से सम्बन्धित करना, उसको व्यावहारिक बनाना, शिक्षा किसी उद्योग के माध्यम से देना, शिक्षा को स्वावलम्बी बनाना आदि बातें उनके यथार्थवादी होने के प्रमाण हैं।

गाँधीजी की प्रयोजनवादी विचारधारा– महात्मा गाँधीजी के शिक्षा दर्शन में प्रयोगात्मक प्रयोजनवाद का प्रतिबिम्ब स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। गाँधीजी जीवन भर सत्य के लिए प्रयास करते रहे और उन्हीं बातों को स्वीकार करते रहे जो प्रयोग की कसौटी पर ठीक उतरती रही। इस दृष्टि से वे प्रयोजनवादी थे। प्रयोजनवादी दार्शनिकों की भाँति वे शिक्षा को जीवन से सम्बन्धित करना चाहते थे। किसी उद्योग के माध्यम से क्रिया द्वारा शिक्षा देना चाहते थे। सभी शिक्षा के विषयों में समन्वय करना चाहते थे, बालक और शिक्षक की क्रियाशीलता को महत्व देते थे तथा बालकों में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करना चाहते थे। इन विचारों के कारण सभी व्यक्ति उन्हें प्रयोजनवादी मानते थे। इसके अतिरिक्त हमें उनकी बेसिक शिक्षा योजना में प्रयोजनवादी शिक्षण विधि तथा सिद्धान्तों की स्पष्ट झलक दिखलाई पड़ती है।

निष्कर्ष– महात्मा गाँधीजी ने पृथक रूप से किसी भी दर्शन का प्रतिपादन नहीं किया। उन्होंने शिक्षा के विभिन्न तत्वों की व्याख्या अपनी मान्यताओं के अनुसार की और एक अपना शिक्षा दर्शन प्रस्तुत किया जिसे गाँधी–दर्शन की संज्ञा दी गई। इस शिक्षा–दर्शन में लगभग सभी दर्शनों की स्पष्ट झलक दृष्टिगोचर होती है, परन्तु ये दर्शन एक–दूसरे के विरोधी रूप में नहीं वरन् पूरक रूप में दिखलाई पड़ते हैं।

अतः श्री एस0एस0 पटेल के कथनानुसार– "गाँधीजी का शिक्षा–दर्शन अपनी योजना में प्रकृतिवादी उद्देश्यों में आदर्शवादी और कार्यक्रम एवं शिक्षण विधि में प्रयोजनवादी है।"[1]

अन्त में हम दावे के साथ कह सकते हैं कि महात्मा गाँधीजी के शिक्षा–दर्शन में सभी वादों का यथास्थान समुचित रूप में प्रयोग हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग; प्रो0 रमन बिहारी लाल, आरलाल बुक डिपो मेरठ, द्वितीय संस्करण, 2006–07
2. उदीपमान भारतीय समाज में शिक्षक; एन0आर0 स्वरूप सक्सेना; डा0 शिखा चतुर्वेदी; डा0 के0पी0 पाण्डेय; आरलाल बुक डिपो; संस्करण– 2006
3. शिक्षा एवं भारतीय समाज; डा0 रामपाल सिंह, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
4. शिक्षा के सिद्धान्त; पाठक एवं त्यागी; विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
5. शिक्षा के तात्विक सिद्धान्त; डा0 एस0के0 अग्रवाल; राजेश पब्लिशिंग हाऊस, शंकर सदन–729, पी0एल0 शर्मा रोड, मेरठ; 23 संस्करण, 1991–92

Scanned by CamScanner